शेमुषी

द्वितीयो भागः

दशमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

NBCampus

1061

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2006 पौष 1928

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2007 आश्विन 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
नवंबर 2014 अग्रहायण 1936
दिसंबर 2015 पौष 1937
जनवरी 2017 पौष 1938
जनवरी 2018 माघ 1939
अप्रैल 2019 चैत्र 1941

PD 75T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ ??.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा बॉक्स कॉरुगेटर्स एवं ऑफ़सेट प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 14ए एवं बी, सैक्टर-1, इंडस्ट्रियल एरिया गोविन्दपुरा, भोपाल - 462 023 द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-642-X

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अबिनाश कुल्लू*
सहायक संपादक	:	*ओम प्रकाश*
उत्पादन सहायक	:	*ओम प्रकाश*

आवरण
करन चड्ढा

चित्रांकन
अरूप गुप्ता एवं सुजीत सिंह

NBCampus

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय- ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितशिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक- समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। 2017 तमे वर्षे पुनरीक्षितमिदं पुस्तकं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि- गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां

मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभ–त्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय–पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं छात्राणां कृते पुस्तकमिदं उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नव देहली — निदेशकः

20 नवम्बर 2017 — राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

NBCampus

भूमिका

संस्कृत की गणना विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में की जाती है। इसका साहित्यिक विस्तार वैदिक युग से लेकर आज तक अबाध रूप से चल रहा है। मानवीय चिंतन के सभी क्षेत्रों में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। युग-परिवर्तन के साथ-साथ इसके आयाम भी बदलते रहे हैं। भाषा और साहित्य की व्यापकता को देखकर इसे देववाणी भी कहा जाता था जो इसके प्रति भारतीयों की श्रद्धा का परिचायक है।

संस्कृत का प्राचीन साहित्य जीवन-मूल्यों के प्रति (जैसे परोपकार, दान, सत्य, अहिंसा, राष्ट्र-भक्ति, पृथ्वी-प्रेम, सत्कर्म इत्यादि) आदर्श की स्थिति का आकलन करता है। इसका आधुनिक साहित्य प्राचीन मूल्यों के अतिरिक्त मानव की समकालीन समस्याओं और जीवन-संघर्षों को भी निरूपित करता है। अतः विश्व के अन्य साहित्य की तुलना में संस्कृत की संवेदनशीलता को न्यूनतर आँकना ठीक नहीं कहा जा सकता है। यह गौरव का विषय है कि चार हजार वर्षों से भी अधिक संस्कृत साहित्य-धारा में भारतीय समाज का प्रत्यंकन प्रायः प्रामाणिक रूप से होता रहा है।

संस्कृत का महत्त्व केवल प्राचीनता अथवा विषय-व्यापकता की दृष्टि से ही नहीं, अपितु देश के बहुभाषिक परिदृश्य में राष्ट्र की एकता के लिए भी सर्वोपरि है। भारत की अन्य भाषाओं पर संस्कृत के व्याकरण शब्द-संपत्ति तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पड़ा है। आधुनिक संस्कृत अन्य भाषाओं के समान भारतीय बहुभाषिकता का एक अभिन्न अंग है। बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में जिस प्रकार संस्कृत सहायक है, उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता (Multilingualism) का संस्कृत सीखने में भी उपयोग हो सकता है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य दो रूपों में (वैदिक तथा लौकिक) उपलब्ध है। वैदिक साहित्य संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् के रूप में है। **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अथर्ववेद** इन चारों को **संहिता** कहते हैं जिनमें यज्ञ तथा अन्य विषयों के मन्त्रों का संकलन है। इन मन्त्रों का उपयोग बताने के लिए कई ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गये हैं। वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतीकात्मक व्याख्या **आरण्यक** में है, उपनिषद् वैदिक दर्शन का प्रौढ़ रूप है। वेदों को सही संदर्भ में समझने के लिए वेदाङ्ग बने जिनकी

NBCampus

संख्या छह है– **शिक्षा** (उच्चारण–विज्ञान), **व्याकरण** (पद–विज्ञान), **छन्द** (पद्यात्मक मन्त्रों में छन्द व्यवस्था), **निरुक्त** (अर्थ–विज्ञान), **ज्योतिष** (काल तथा खगोल का विज्ञान) तथा **कल्प** (कर्मकाण्ड तथा आचार का शास्त्र)।

लौकिक संस्कृत का आरंभ आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण से हुआ जिसमें आदर्श महापुरुष राम का जीवन–चरित वर्णित है। इसमें वैदिक भाषा से परिष्कृत लौकिक काव्य–भाषा का प्रयोग है। यह सात काण्डों में विभक्त है जिन्हें सर्गों में विभक्त किया गया है। इसमें 24000 श्लोक हैं। एक अन्य प्रारम्भिक विशाल ग्रन्थ वेदव्यास–रचित **महाभारत** है जिसमें एक लाख श्लोक हैं। यह ग्रन्थ अट्ठारह पर्वों में विभक्त है। कौरवों और पाण्डवों के बीच हुआ महायुद्ध इसका मुख्य कथानक है जिसमें अन्याय पर न्याय की विजय हुई थी (यतो धर्मस्ततो जयः)। महाभारत में भारतीय जीवन–पद्धति के व्यापक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। यही कारण है कि इसे सर्वांगपूर्ण आचार–ग्रन्थ के रूप में माना गया है। लोकोक्ति है– **यन्न भारते तन्न भारते** (जो महाभारत में नहीं वह भारत में नहीं)। महाभारत के भीष्म पर्व में उल्लिखित भगवद्गीता अब एक प्रसिद्ध तथा स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध है जिसमें युद्ध के आरम्भ में कृष्ण द्वारा अर्जुन को कर्मयोग का उपदेश दिया गया है। परवर्ती संस्कृत कवियों ने रामायण तथा महाभारत से कथानक लेकर अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

प्राचीन भारत के धार्मिक तथा लौकिक विषयों का वर्णन पुराण साहित्य में मिलता है। मुख्य पुराण अट्ठारह हैं। पुराणों में राष्ट्रीय एकता का प्रयास मिलता है। तीर्थयात्रा, वनों, पर्वतों, और नदियों को श्रद्धेय दिखाकर पुराणों ने पर्यावरण एवं सांस्कृतिक एकता के महत्त्व का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय समाज को आदर्शोन्मुख करने में पुराणों का बहुत योगदान है।

तदनन्तर संस्कृत साहित्य के विविध रूपों का प्रस्फुटन एवं विकास होता है। एक ओर संस्कृत नाटकों की निरन्तर धारा चली तो दूसरी ओर गद्य–पद्य में रचे गए छोटे–बड़े काव्यों का प्रवाह मिलता है। यही परम्परा आज तक चल रही है। कुछ कवियों ने अनेक विधाओं में रचनाएँ कीं, जैसे– संस्कृत के सबसे प्रसिद्ध कवि कालिदास ने दो महाकाव्य (रघुवंश, कुमारसंभव), दो गीतिकाव्य (ऋतुसंहार, मेघदूत) और तीन नाटक (अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र) लिखे।

प्राचीन नाटककारों में भास (13 नाटकों के रचयिता), शूद्रक, विशाखदत्त (मुद्राराक्षस), हर्ष, भट्टनारायण, भवभूति आदि हैं। कुछ नाटककारों ने प्रहसन, भाण आदि लिखकर

NBCampus

अपने काल के जन-जीवन के विकृत पक्ष का व्यंग्यपूर्ण चित्रण किया है। प्राचीन महाकवियों में अश्वघोष, भारवि, भट्टि, माघ, क्षेमेन्द्र, श्रीहर्ष आदि हैं। बिल्हण (विक्रमांकदेवचरित), कल्हण (राजतरंगिणी) आदि ने ऐतिहासिक महाकाव्य लिखे।

गीतिकाव्य या लघुकाव्य के लेखकों में भर्तृहरि (नीति, शृंगार और वैराग्य शतक), अमरुक (अमरुशतक), जयदेव (गीतगोविंद), जगन्नाथ (भामिनीविलास) प्रसिद्ध हैं। गद्यकाव्य के लेखकों में सुबन्धु, बाणभट्ट (हर्षचरित और कादम्बरी), दण्डी (दशकुमारचरित), अम्बिकादत्त व्यास (शिवराज विजय) आदि हैं।

संस्कृत वाङ्मय काव्यशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, राजशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष तथा कोश आदि के हजारों ग्रन्थों की लम्बी परम्परा से भी समन्वित है। ये ग्रन्थ भारतीय विद्वानों की उपलब्धि अभिव्यक्त करते हैं।

प्रस्तुत संकलन : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। पाठ्यचर्या में निम्नांकित लक्ष्य रखे गए हैं–

- भारमुक्त शिक्षा का कार्यक्रम।
- आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में शिक्षा की प्रस्तुति।
- शिक्षा को जीवन के परिवेश से जोड़ना।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।
- कण्ठाग्र करने की परम्परागत विधि से हटकर छात्रों को चिंतन के लिए प्रेरित करना।
- छात्रों की कल्पनाशीलता तथा रचनात्मकता का विकास।

संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप नवम कक्षा के लिए शेमुषी प्रथम भाग नामक पाठ्यपुस्तक के अनंतर दशम कक्षा के लिए यह शेमुषी द्वितीय भाग पुनरीक्षित संस्करण (2017) प्रस्तुत किया जा रहा है। इस संकलन में संस्कृत को जीवन्त भाषा के रूप में देखा गया है जिसकी धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है। इसीलिए इसमें आधुनिक संस्कृत रचनाओं के समावेश के साथ अन्य भाषाओं के साहित्य से अनूदित पाठों को भी ग्रहण किया गया है। पाठों के आरम्भ में पाठ-सन्दर्भ दिए गए हैं जिनसे पाठ-प्रसंगों को समझा जा सके। छात्रों को सीखने का अधिकाधिक अवसर मिल सके इसलिए पाठों के अन्त में विविध अभ्यासों वाली प्रश्नावली दी गयी है।

NBCampus

छात्र पाठों को स्वयमेव समझ सकें इसके लिए 'शब्दार्था:' शीर्षक के अन्तर्गत पाठ में आए नवीन तथा कठिन शब्दों के संस्कृत तथा हिंदी में अर्थ दिए गए हैं। 'योग्यता-विस्तार' के अन्तर्गत ऐसी सामग्री दी गई है जिससे छात्र ज्ञान के अग्रिम चरण की ओर सहज उन्मुख हो सकें। अध्यापकों के लिए पर्याप्त शिक्षण-संकेत दिए गए हैं ताकि निर्धारित पाठ्य बिंदुओं को ध्यान में रखकर अध्यापन कर सकें। पाठों को दृश्य विधि से स्पष्ट करने के लिए विषयानुकूल चित्र भी दिए गए हैं।

इस पुस्तक में कुल 12 पाठ रखे गए हैं। इनमें सात पाठ प्राचीन ग्रन्थों से तथा पाँच पाठ आधुनिक मौलिक अथवा अनूदित संस्कृत रचनाओं से लिए गए हैं। इस प्रकार इस पुस्तक में पाँच प्रकार के पाठ हैं–

(क) संस्कृत की प्राचीन पुस्तकों से– *शिशुलालनम्, व्यायामः सर्वदा पथ्यः, बुद्धिर्बलवती सदा, सुभाषितानि, प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्, अन्योक्तयः, जननी तुल्यवत्सला।*

(ख) संस्कृत की आधुनिक मौलिक रचनाओं से– *शुचिपर्यावरणम्* तथा *सौहार्दं प्रकृतेः शोभा, विचित्रः साक्षी।*

(ग) अन्य भाषाओं से संस्कृत में अनूदित–*सूक्तयः।*

(घ) ललित निबंध–*भूकम्पविभीषिका।*

(ङ) संवादात्मक पाठ–सौहार्दं प्रकृतेः शोभा।

आधुनिक संस्कृत लेखकों में 'शुचिपर्यावरणम्' के कवि प्रो. हरिदत्त शर्मा इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में संस्कृत के वरिष्ठ आचार्य हैं। उनकी अनेक काव्य-कृतियाँ प्रकाशित हैं। 'विचित्रः साक्षी' के लेखक श्री ओमप्रकाश ठाकुर हैं जिन्होंने आधुनिक परिवेश की अनेक संस्कृत कथाएँ लिखी हैं। 'भूकम्प विभीषिका' आधुनिक युग का संकलित निबन्ध है जिसमें एक नैसर्गिक उत्पात का वर्णन है। इसके अतिरिक्त 'सौहार्दं प्रकृते शोभा' एक संवादात्मक पाठ है जिसमें इस प्रकृति में विद्यमान सभी जीवों के महत्त्व का वर्णन किया गया है और समरसता का संदेश दिया गया है।

अध्यापकों से निवेदन

संस्कृत के प्रति छात्रों में अभिरुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा में विद्यमान बहुभाषिकता को आधार के रूप में उपयोग करें। हिन्दी, अंग्रेज़ी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को माध्यम बनाते हुए संस्कृत भाषा में दक्ष होने के लिए छात्रों को उन्मुख करने का प्रयास करें।

NBCampus

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्यपुस्तक में आए हुए प्रयोगों को आधार बनाकर करना समीचीन होगा। इससे छात्रों में कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का अधिकाधिक विकास हो सकेगा।

ध्यातव्य बिन्दवः

1. **शुचिपर्यावरणम्**– शिक्षक छात्रों के उच्चारण तथा सस्वर वाचन/गायन पर ज़ोर दें।
2. **बुद्धिर्बलवती सदा**– बुद्धि और शारीरिक शक्ति का तारतम्य समझाएँ। कथा से मिलती-जुलती दूसरी घटनाओं का भी उल्लेख करें। इस कथा में रोचकता तथा उपदेश के बिन्दुओं को स्पष्ट करें।
3. **व्यायामः सर्वदा पथ्यः**– व्यायाम के लाभ को छात्रों को समझाएँ तथा इसके स्थायी प्रयोग पर बल देते हुए श्लोकों का सस्वर पाठ सिखाएँ।
4. **शिशुलालनम्**– राम और कुश-लव के मिलन को पारिवारिक सन्दर्भ में प्रस्तुत कर पाठ को पढ़ाएँ। कुश-लव की सरलता तथा स्वाभिमान पर बल दें। राम के वात्सल्य का भी निरूपण करें। रंगमंच पर अभिनय द्वारा भी इसकी प्रस्तुति कराई जा सकती है।
5. **जननी तुल्यवत्सला**– महाभारत पर आधारित इस पाठ का आरंभ माता के ममतामय व्यवहार के उदाहरणों के साथ किया जा सकता है।
6. **सुभाषितानि**– संस्कृत तथा अन्य भाषाओं में सुभाषित पद्यों तथा वाक्यों का महत्त्व समझाएँ। श्लोकों का सस्वर वाचन सिखाएँ।
7. **सौहार्दं प्रकृतेः शोभा**– समाज में मेलजोल की दृष्टि से इस पाठ में पशु-पक्षियों के माध्यम से सामाजिक समरसता का सन्देश दिया गया है।
8. **विचित्रः साक्षी**– किसी विवादास्पद विषय के समाधान में साक्षी (गवाह, witness) की आवश्यकता समझाते हुए कथा को रोचक ढंग से प्रस्तुत करें। न्यायाधीश की बुद्धिमत्ता पर बल दें।
9. **सूक्तयः**– अन्य भाषाओं में भी विद्यमान अमूल्य निधियों के संस्कृत रूपान्तरण की पूर्वपीठिका से इस पाठ का आरंभ किया जा सकता है।
10. **भूकम्पविभीषिका**– प्राकृतिक उपद्रवों (जैसे- बाढ़, भूस्खलन, भूकम्प) की अनिश्चितता बताकर इनसे बचने के उपायों पर बल दें। पाठ को छात्रों द्वारा वाचन का भी आग्रह करें। व्याकरण का भी अनुप्रयुक्त रूप से उपयोग सिखाएँ।

NBCampus

11. **प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्**– नाटकीय वाचन छात्रों द्वारा नाटक पढ़वाएँ, मित्र के महत्त्व पर संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं से उद्धरण दें, छात्रों से भी पूछें।
12. **अन्योक्तयः**– काव्य में अन्योक्ति का महत्त्व बताएँ, प्राकृतिक पदार्थों से मानव को सीखने के लिए उपयोगी भावों को प्रकाशित करें, श्लोकों का सस्वर वाचन सिखाएँ तथा यथार्थ के वर्णन के उद्देश्य (स्थिति में सुधार के उपाय) पर प्रकाश डालें।

छात्रों की सुगमता को ध्यान में रखकर प्रत्यक्ष, व्याकरण एवं अनुवाद पद्धतियों की समन्वित विधि के साथ-साथ कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता को आधार बनाकर पाठों का अध्यापन करें ताकि संस्कृत अध्ययन को सरल से कठिन सोपानों पर चलने के क्रम में रोचक तथा उपयोगी बनाया जा सके।

यद्यपि परिषद् की अन्य संस्कृत पुस्तकों के समान इस संकलन (द्वितीयो भागः) को भी छात्रों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि इसे और भी अधिक उपयोगी तथा स्तरीय बनाने के लिए हम अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का स्वागत करेंगे।

NBCampus